The Hindu Plus Summary : 08.01.2024

मेन्स मास्टर

एक नई ऊंचाई: आदित्य-एल1 मिशन और इसरो आउटरीच पर

।मिशन भव्यता:

- गंतव्य L1: पृथ्वी से लगभग 1.5 मिलियन किमी दूर, L1 लैग्रेंज बिंदु के चारों ओर आदित्य-L1 की कक्षा, पांच वर्षों तक सूर्य का निर्बाध दृश्य प्रदान करती है। यह "मीठा स्थान" गुरुत्वाकर्षण बलों को संतुलित करता है, जिससे ईंधन की आवश्यकता कम हो जाती है।
- सात सौर जासूस: इसके शस्त्रागार में शामिल हैं:
  - वीईएलसी: सूर्य के उग्र बाहरी वातावरण का पता लगाने के लिए एक कोरोनोग्राफ।
  - सूट: सौर ज्वालाओं और सक्रिय क्षेत्रों को देखने के लिए एक पराबैंगनी दूरबीन।
  - SoLEXS और HEL1OS: सौर जासूस विस्फोटक ज्वालाओं और विशाल कोरोनल द्रव्यमान इजेक्शन पर नज़र रखते हैं।
  - ASPEX और PAPA: प्लाज्मा जासूस सौर हवा के आवेशित कणों का अध्ययन कर रहे हैं।
  - डिजिटल मैग्नेटोमीटर: अंतरिक्ष यान के चारों ओर चुंबकीय क्षेत्र का मानचित्रण।

एक विरासत पर निर्माण:

- आदित्य-एल1 भारत के ऐतिहासिक सौर अवलोकन का विस्तार करता है, जो 1901 में कोडाइकनाल वेधशाला से जुड़ा था।
- यह XPoSat मिशन (एक्स-रे पोलारिमेट्री) और एस्ट्रोसैट का अनुसरण करता है, जो भारत की विविध अंतरिक्ष क्षमताओं को प्रदर्शित करता है।

डेटा से परे:

- अंतर को पाटना: सार्वजनिक धारणा को बढ़ावा देने की आवश्यकता हो सकती है। जबकि आदित्य-एल1 और एस्ट्रोसैट भारत के लिए अभूतपूर्व हैं, उनकी तुलना तीन अंतरिक्ष एजेंसियों के सहयोगात्मक प्रयास जेम्स वेब से करना सेब और संतरे की तुलना करने जैसा है।
- पहुंच को बढ़ाना: इसरो निम्नलिखित के माध्यम से सार्वजनिक पहुंच का विस्तार कर सकता है:
  - खुले दिन: आदित्य-एल1 में गहराई तक जाने और सार्वजनिक हित को प्रज्वलित करने के लिए मिशन-विशिष्ट कार्यक्रम।
  - विज्ञान संचार: सुपाच्य प्रारूपों में खोजों के नियमित अपडेट और स्पष्टीकरण।
  - मिशन घटक: सार्वजनिक कल्पना को पकड़ने के लिए विशेष रूप से तत्वों को डिजाइन करना।

चुनौतियाँ और अवसर:

- फंडिंग: इसरो की हालिया सफलताओं के बारे में जनता का उत्साह बढ़ी हुई फंडिंग का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जिससे आगे के प्रयासों को बढ़ावा मिलेगा।
- सहयोग: विश्वविद्यालयों, स्कूलों और विज्ञान संचारकों के साथ साझेदारी का लाभ उठाकर आउटरीच प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।

एक उज्जवल भविष्य:

आदित्य-एल1 सिर्फ एक अंतरिक्ष यान नहीं है; यह भारतीय सौर विज्ञान के लिए एक बड़ी छलांग है। सूर्य के रहस्यों को उजागर करके, यह अंतरिक्ष मौसम, प्रौद्योगिकी और संचार को प्रभावित करने की हमारी समझ को बदलने की क्षमता रखता है। लेकिन सच्चा प्रभाव जनता से जुड़ने, भावी पीढ़ियों को सितारों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करने में निहित है। प्रभावी संचार और आउटरीच के माध्यम से, इसरो यह सुनिश्चित कर सकता है कि आदित्य-एल1 की यात्रा न केवल सूर्य को, बल्कि लोगों के दिलों और दिमागों को भी रोशन करे, खोज के प्रति जुनून को प्रज्वलित करे जिसकी कोई सीमा नहीं है।

पश्चिम बंगाल में बाल विवाह में वृद्धि

संदर्भ

यह लेख भारत में, विशेषकर पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में बाल विवाह की लगातार चुनौती पर प्रकाश डालता है। नीतिगत हस्तक्षेपों और शैक्षिक प्रगति के बावजूद, यह प्रथा एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है, जो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है। जबकि कन्याश्री प्रकल्प जैसी पहल का उद्देश्य बाल विवाह को रोकना है, उच्च घटना दर के कारण उनकी प्रभावशीलता को जांच का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, कमजोर कानून प्रवर्तन, सामाजिक पूर्वाग्रह, प्रवासन और व्यापक जमीनी स्तर के अभियानों की कमी इस मुद्दे को बरकरार रखे हुए है। लेख बाल विवाह से प्रभावी ढंग से निपटने और युवा लड़कियों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिए शिक्षा, कानून प्रवर्तन और सामुदायिक भागीदारी को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देता है।

मुख्य निष्कर्ष:

• भारत में बाल विवाह में कुल मिलाकर कमी आई है, लेकिन कुछ राज्यों (बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र) में केंद्रित है।

• भारत में पांच में से एक लड़की की अभी भी कानूनी उम्र से कम शादी होती है।

• पश्चिम बंगाल में बाल विवाह में उल्लेखनीय पूर्ण वृद्धि देखी गई।

प्रभाव:

• बाल विवाह मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है; जन्म के समय बेहद कम वजन वाले शिशुओं के उदाहरणों से जुड़ा हुआ है।

• मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल का एक आर्थिक रूप से गरीब जिला है, जहां बाल विवाह और शिशु मृत्यु दर के मामले अधिक हैं।

नीतिगत हस्तक्षेप:

• कन्याश्री प्रकल्प: लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने और बाल विवाह को हतोत्साहित करने के उद्देश्य से एक नकद हस्तांतरण योजना, जिसमें 81 लाख लड़कियां शामिल हैं।

• लड़कियों के बीच स्कूल नामांकन में वृद्धि के बावजूद योजना की प्रभावशीलता पर सवाल उठाए गए।

चुनौतियाँ और विरोधाभास:

• शैक्षिक उपलब्धि में प्रगति के बावजूद, बाल विवाह की दर ऊंची बनी हुई है।

• साक्षरता दर और बाल विवाह के बीच कोई सीधा संबंध नहीं।

• प्रवासन और कार्यबल की गतिशीलता बाल विवाह के बने रहने में योगदान करती है।

कानूनों का कार्यान्वयन:

• बाल विवाह पर कानून लागू करने के मुद्दे: बाल विवाह के कम मामलों वाले राज्यों की तुलना में पश्चिम बंगाल में कम मामले दर्ज किए गए हैं।

भविष्य का दृष्टिकोण:

• नीतिगत हस्तक्षेपों और कानूनों के बावजूद, अपर्याप्त सामाजिक अभियानों, राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और मौजूदा कानूनों को जमीनी स्तर पर लागू करने के कारण चुनौतियां बनी हुई हैं।

इस्लामिक स्टेट ने ईरान पर हमला क्यों किया?

संदर्भ

सारांश ईरान और इस्लामिक स्टेट (आईएस) के बीच तनाव पर प्रकाश डालता है। आईएस ईरान को एक वैचारिक प्रतिद्वंद्वी और दुश्मन के रूप में देखता है, जबकि ईरान आईएस को एक सुरक्षा खतरे के रूप में देखता है, विशेष रूप से करमान में हाल ही में हुए घातक बम विस्फोटों में देखा गया है।

- इस्लामिक स्टेट (आईएस) ने जनवरी 2020 में अमेरिका द्वारा मारे गए ईरानी जनरल कासिम सुलेमानी के लिए करमान में एक स्मारक कार्यक्रम में बम हमलों की जिम्मेदारी ली।
- यह हमला, जिसमें कम से कम 84 लोग मारे गए और 200 से अधिक घायल हुए, ईरान में आईएस द्वारा दावा किया गया तीसरा बड़ा हमला है, जो तेहरान के सामने आतंकवाद के बढ़ते खतरे को उजागर करता है।
- आईएस वैचारिक प्रतिद्वंद्विता के कारण ईरान को निशाना बनाता है, ईरान को युद्ध के मैदान के दुश्मन और शिया धर्मतंत्र के रूप में देखता है।
- ईरान आईएस को सुन्नियों और शियाओं के बीच घातक संघर्ष को पुनर्जीवित करने की कोशिश और तत्काल सुरक्षा खतरे के रूप में देखता है।
- ईरान ने शिया लामबंदी इकाइयों के माध्यम से आईएस से लड़ाई की है और आईएस की भौतिक संरचनाओं को हराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- कुद्स फोर्स के कमांडर कासिम सुलेमानी ने ईरान के आगे के रक्षा सिद्धांत को आकार देने और पूरे पश्चिम एशिया में शिया मिलिशिया समूहों के नेटवर्क के माध्यम से क्षेत्रीय ताकत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- करमान में सुलेमानी के कबर के पास स्मारक कार्यक्रम पर हमला ईरान की बढ़ती सुरक्षा कमजोरियों और आईएस की बढ़ती क्षमताओं की ओर इशारा करता है।
- यह ऐसे समय में आया है जब ईरान बढ़ते क्षेत्रीय दबाव में है, पारंपरिक बाहरी सुरक्षा खतरों और एक साथ बढ़ते आंतरिक सुरक्षा खतरे का सामना कर रहा है।

लाल सागर संकट का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा है?

भारतीय व्यापार पर प्रभाव:

• लाल सागर में हौथी मिलिशिया के हमलों से कार्गो शिपिंग लाइनों को मार्ग से बचने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे भारत से पश्चिमी गोलार्ध के लगभग 90% कार्गो को लंबे केप ऑफ गुड होप मार्ग के माध्यम से पुनर्निर्देशित किया गया।
• प्रमुख शिपिंग लाइनों और फीडर जहाजों ने लाल सागर में परिचालन बंद कर दिया,

जिससे भारतीय निर्यात और आयात के प्रवाह में महत्वपूर्ण व्यवधान उत्पन्न हुआ।

भारतीय निर्यात पर प्रभाव:

• एफओबी (फ्री ऑन बोर्ड) अनुबंध खरीदारों पर माल ढुलाई का बोझ डालते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय निर्यातकों से माल ढुलाई लागत में वृद्धि के कारण खेप को रोकने का अनुरोध होता है।
• सीआईएफ (लागत, बीमा और माल ढुलाई) या सी एंड एफ (लागत और माल ढुलाई) अनुबंधों के कारण निर्यातकों को बढ़ी हुई माल ढुलाई लागत वहन करने की आवश्यकता होती है, जिससे मूल्य निर्धारण की गतिशीलता प्रभावित होती है और शिपमेंट में देरी होती है।
• लगभग 20-25% खेप को रोका जा रहा है, जिससे विशेष रूप से कम मूल्य, उच्च मात्रा वाले कार्गो और खराब होने वाली वस्तुओं पर असर पड़ रहा है।

भारतीय आयात पर प्रभाव:

• लंबे पारगमन समय और आयात के लिए बढ़ी हुई लागत, संभावित लागत निहितार्थ के लिए महत्वपूर्ण आयात का आकलन किया जा रहा है।
• आयात और निर्यात दोनों चक्र लंबे हो गए, जिसके परिणामस्वरूप संभावित रूप से अंतिम उत्पाद महंगे हो गए; उदाहरण के लिए, पेट्रोल और डीजल की कीमतें कम करने की योजना पर असर पड़ रहा है।

तेल टैंकर प्रभाव:

• संकट के कारण प्रभावित मार्गों के लिए माल ढुलाई दरें बढ़ जाती हैं, लेकिन समग्र टैंकर बाजार में बड़े पैमाने पर पुनः मार्ग परिवर्तन नहीं दिखता है, जिससे टैंकर उद्योग पर सीमित प्रभाव का पता चलता है।
• लाल सागर में अतिरिक्त युद्ध जोखिम प्रीमियम माल ढुलाई दर में वृद्धि में योगदान देता है, लेकिन केप ऑफ गुड होप के माध्यम से पुन: रूटिंग से जुड़ी लागत अधिक रहती है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

• संयुक्त राष्ट्र ने हौथी हमलों की निंदा करते हुए कहा कि कोई भी कारण या शिकायत लाल सागर में नेविगेशन की स्वतंत्रता के खिलाफ ऐसे कार्यों को उचित नहीं ठहराती है।

• अमेरिका ने खुले और खतरे से मुक्त समुद्री मार्ग सुनिश्चित करने के लिए 'ऑपरेशन प्रॉस्पेरिटी गार्जियन' के लिए और अधिक समर्थन का आह्वान किया।

• भारत स्थिति पर बारीकी से नजर रखता है, वाणिज्य सचिव अधिकारियों और व्यापार निकायों के साथ चर्चा में लगे हुए हैं।.

ट्रक ड्राइवरों ने हड़ताल का आह्वान क्यों किया है?

अवलोकन:

• नए भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) कानून के तहत हिट-एंड-रन मामलों के लिए कड़ी सजा के विरोध में जनवरी में पूरे भारत में ट्रक ड्राइवर हड़ताल पर चले गए।

• हिट-एंड-रन क्लॉज (धारा 106 (2)) में दुर्घटना स्थल से भागने पर 10 साल तक की कैद और जुर्माने का प्रावधान है, जबकि भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के तहत मौजूदा जुर्माना बहुत कम है।

• ड्राइवरों ने अपने कम वेतन और उचित दुर्घटना जांच प्रोटोकॉल की कमी को ध्यान में रखते हुए जुर्माने की कठोरता के बारे में चिंता जताई, जिससे संभावित अनुचितता हो सकती है।

• सरकार ने ट्रांसपोर्टरों के निकायों के साथ बातचीत शुरू की, लेकिन तनाव बना हुआ है क्योंकि कुछ ड्राइवर संघों ने इस खंड को वापस लेने की मांग करते हुए प्रदर्शन जारी रखा है।

प्रमुख बिंदु:

• खंड विवरण: बीएनएस धारा 106 (2) मौजूदा आईपीसी धारा 304ए की तुलना में हिट-एंड-रन मामलों के लिए जेल की अवधि और जुर्माना बढ़ाती है। यह दुर्घटनाओं के मामले में घायल व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता के प्रावधानों को भी हटा देता है।

• ड्राइवर की चिंताएं: उन्हें कम वेतन और अपर्याप्त दुर्घटना जांच प्रथाओं के कारण असंगत दंड का डर है जो उन्हें गलत तरीके से दोषी ठहरा सकता है। वे ट्रक केबिन में लंबे समय तक काम करने और एर्गोनोमिक मुद्दों के कारण होने वाली थकान को भी उजागर करते हैं।

• सरकार की प्रतिक्रिया: गृह मंत्रालय ने ट्रांसपोर्टरों के निकाय एआईएमटीसी से मुलाकात की, नए खंड को लागू करने से पहले परामर्श का वादा किया और आश्वासन दिया कि इसे अभी तक लागू नहीं किया गया है। हालाँकि, कुछ ड्राइवर संघ असंतुष्ट हैं।

• सड़क दुर्घटना डेटा: भारत में सभी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों में हिट-एंड-रन के मामले 18.1% हैं, और इनमें से 9% मौतों में ट्रक शामिल हैं।

अनसुलझी समस्या:

• बीएनएस निर्माण के दौरान ड्राइवर संघों के साथ सीधे परामर्श का अभाव।

• ट्रक ड्राइवरों के प्रति पक्षपातपूर्ण दोषारोपण की चिंताओं को दूर करने के लिए पुलिस को उचित दुर्घटना जांच प्रोटोकॉल और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

• विनियमित कार्य घंटे और बेहतर केबिन एर्गोनॉमिक्स के माध्यम से ड्राइवर की थकान को दूर करना।

• नए कानून में दुर्घटना पीड़ितों को चिकित्सा सहायता के प्रावधान शामिल करना।

आउटलुक:

• सरकार को खुली बातचीत और हिट-एंड-रन क्लॉज में संभावित संशोधनों के माध्यम से ड्राइवर की चिंताओं को दूर करने की आवश्यकता है।

• यातायात नियमों का बेहतर कार्यान्वयन और ओवरलोडिंग और अवैध वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई महत्वपूर्ण है।

• ड्राइवर प्रशिक्षण, थकान प्रबंधन प्रथाओं और ट्रकों में एर्गोनोमिक समायोजन में निवेश करने से सुरक्षा और ड्राइवरों की भलाई दोनों को लाभ हो सकता है।

• विश्वास कायम करने और सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए उचित दुर्घटना जांच और कानून का निष्पक्ष कार्यान्वयन सुनिश्चित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष में, जबकि सख्त हिट-एंड-रन क्लॉज का उद्देश्य गैर-जिम्मेदाराना ड्राइविंग को रोकना और पीड़ित न्याय को बढ़ावा देना है, संवाद, निष्पक्ष कार्यान्वयन और बेहतर सड़क सुरक्षा उपायों के माध्यम से ड्राइवर की चिंताओं को संबोधित करना एक स्थायी समाधान खोजने के लिए महत्वपूर्ण है।

जीएसटी राजस्व से राज्यों में उपभोग वृद्धि में विसंगति का पता चलता है

जबकि समग्र जीएसटी राजस्व मजबूत है, राज्य-वार डेटा पूरे भारत में उपभोग वृद्धि की एक खंडित तस्वीर दिखाता है, जिसमें कुछ राज्य राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं।

प्रमुख बिंदु:

• जीएसटी राजस्व: कुल मिलाकर, जीएसटी संग्रह मजबूत है, 11.7% की दर से बढ़ रहा है और प्रति माह औसतन ₹1.66 लाख करोड़ है। हालाँकि, राज्य जीएसटी संग्रह में वृद्धि दर की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाई देती है।

• राज्य की असमानताएँ: मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के नेतृत्व में आठ राज्यों में 17% से 18.8% तक की मजबूत राज्य जीएसटी वृद्धि देखी जा रही है।

• पिछड़े राज्य: गुजरात, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और ओडिशा शीर्ष 10 जीएसटी योगदानकर्ताओं में से हैं जहां विकास दर राष्ट्रीय औसत 15.2% से धीमी है।

• संभावित कारण:

  ○ असमान ग्रामीण मांग: ओडिशा, राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में कृषि क्षेत्र का कमजोर प्रदर्शन ग्रामीण खपत को प्रभावित कर सकता है।

  ○ वेतन वृद्धि में कमी: इंडिया रेटिंग्स और रिसर्च का सुझाव है कि सीमित वेतन वृद्धि, विशेष रूप से कम आय वाले परिवारों के लिए, व्यापक उपभोग वसूली में बाधा बन रही है।

- विषम मांग: उपभोग वृद्धि मुख्य रूप से उच्च आय वाले परिवारों द्वारा संचालित हो सकती है, जो निम्न आय समूहों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की उपेक्षा करती है।

आउटलुक:

• राज्यों में असमान उपभोग पैटर्न पिछड़े क्षेत्रों में मांग को बढ़ाने के लिए अनुरूप रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

• कृषि क्षेत्र में सुधार और ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास जैसे उपायों के माध्यम से ग्रामीण मांग में सुधार महत्वपूर्ण हो सकता है।

• व्यापक-आधारित उपभोग वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए आय असमानता को संबोधित करने और सभी आय वर्गों में वेतन वृद्धि को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

अतिरिक्त जानकारी:

• उत्तर-पूर्वी राज्यों और जम्मू-कश्मीर सहित छोटे राज्य और केंद्र शासित प्रदेश, बड़े राज्यों की तुलना में उच्च राज्य जीएसटी वृद्धि दिखा रहे हैं।

• यह इन क्षेत्रों में आर्थिक विस्तार की संभावना का संकेत दे सकता है और इन उभरते बाजारों को पोषित करने के लिए लक्षित समर्थन की मांग कर सकता है।

कुल मिलाकर, जीएसटी डेटा भारत में उपभोग वृद्धि की एक जटिल तस्वीर को दर्शाता है। क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देना भविष्य में टिकाऊ और मजबूत मांग हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

प्रीलिम्स बूस्टर

सबसे पहले, IAF C130 गरुड़ कमांडो के साथ कारगिल में रात्रि लैंडिंग करता है

रात्रि लैंडिंग का महत्व:

- कारगिल एएलजी में पहली बार रात्रि लैंडिंग चुनौतीपूर्ण इलाकों में चौबीसों घंटे विशेष अभियान चलाने की भारतीय वायुसेना की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

- लगभग 10,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित कारगिल एएलजी में रात्रि लैंडिंग सुविधाओं का अभाव है और उबड़-खाबड़ इलाकों से घिरा हुआ एक प्रतिबंधित मार्ग है।

- सफल रात्रि लैंडिंग प्रतिकूल परिस्थितियों में महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विशेष अभियानों को अंजाम देने की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

सामरिक महत्व:

- कारगिल एएलजी इस क्षेत्र में एकमात्र हवाई पट्टी के रूप में महत्वपूर्ण है, जो प्रतिबंधित हवाई पहुंच वाले क्षेत्र में आकस्मिकताओं के लिए महत्वपूर्ण साबित होती है।

- IAF जम्मू और कश्मीर में पूर्ण हवाई क्षेत्रों से संचालित होता है, जबकि लद्दाख और सीमाओं के पास ALG महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ALG उन्नयन एवं विस्तार:

- सीमाओं के पास, विशेषकर चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर एएलजी को पुनर्जीवित करने के लिए रक्षा मंत्रालय के प्रयास।

- परियोजनाओं में अरुणाचल प्रदेश में एएलजी का उन्नयन और राष्ट्रीय राजमार्गों पर आपातकालीन लैंडिंग स्ट्रिप्स का विकास शामिल है।

- पैंगोंग त्सो के पास एएलजी न्योमा को लड़ाकू विमानों को संभालने में सक्षम पूर्ण रनवे में परिवर्तित किया जा रहा है, जिसके 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है।

- 16,700 फीट की ऊंचाई पर स्थित एएलजी दौलत बेग ओल्डी, सब-सेक्टर नॉर्थ के लिए हवाई कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण महत्व रखता है।

कश्मीरी लिपि को बचाने के लिए डिजिटल उपकरण तैयार

ऐतिहासिक गिरावट:

- कश्मीरी भाषा का लिखित लिपि ज्ञान 2013 तक 5% तक गिर गया, जिससे साहित्य की पहुंच सीमित हो गई।

- औपचारिक शिक्षण के अभाव के परिणामस्वरूप एक पीढ़ी कश्मीरी में लिखने या पढ़ने में असमर्थ हो गई।

टेक दिग्गजों की पहल:

- माइक्रोसॉफ्ट के एमएस ट्रांसलेटर और गूगल ट्रांसलेट में कश्मीरी भाषा को शामिल करने की तैयारी है, जिससे जम्मू-कश्मीर और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) के 70 लाख वक्ताओं को फायदा होगा।

- अदबी मरकज़ कामराज़ (एएमके) के अमीन भट ने भाषा संरक्षण और साहित्य पहुंच को बढ़ाने में सहायता के लिए माइक्रोसॉफ्ट और गूगल की सराहना की।

सांस्कृतिक प्रचार:

- एएमके के अभियान से Google को 17,000 अनुरोध प्राप्त हुए, जिसमें अनुवाद ऐप्स में कश्मीरी को शामिल करने का आग्रह किया गया।

- रेडियो कश्मीर, सांस्कृतिक अकादमियों और गायकों के प्रयासों ने लोक संगीत के माध्यम से भाषा संरक्षण में योगदान दिया।

अध्ययन से प्रकाश संश्लेषण के सबसे पुराने प्रमाण का पता चलता है

Discover खोज: कैथरीन डेमोलिन और उनके सहयोगियों ने 1.75 अरब साल पुराने माइक्रोफॉसिल्स की खोज की, जो थायलाकोइड्स के साक्ष्य प्रदर्शित करते हैं, जो ऑक्सीजनयुक्त प्रकाश संश्लेषण के विकास पर प्रकाश डालते हैं।

थायलाकोइड्स: पौधों के क्लोरोप्लास्ट और कुछ साइनोबैक्टीरिया में पाई जाने वाली झिल्ली-बद्ध संरचनाएं, ऑस्ट्रेलिया के मैकडरमॉट फॉर्मेशन से नेविफुसा मेजेन्सिस जीवाश्मों के भीतर पाई गईं, जो 1.75 अरब साल पहले प्रकाश संश्लेषण के संभावित विकास का सुझाव देती हैं।

ऑक्सीजन विकास: प्रकाश संश्लेषण के उद्भव के समय पर निर्णायक नहीं होने पर, खोज महान ऑक्सीकरण घटना के दौरान थायलाकोइड विकास और बढ़ते ऑक्सीजन स्तर को समझने के लिए पुराने माइक्रोफॉसिल के आगे के विश्लेषण की आवश्यकता पर जोर देती है।

मेटाबोलिक गतिविधि: थायलाकोइड ऑक्सीजनिक प्रकाश संश्लेषण चयापचय का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जो सुप्त अवस्था के बजाय चयापचय रूप से सक्रिय वनस्पति कोशिकाओं की उपस्थिति का संकेत देता है, जो थायलाकोइड-असर साइनोबैक्टीरिया के जीवाश्म रिकॉर्ड को 1.2 बिलियन वर्षों तक बढ़ाता है।